प्लीहा रोग (एन्थ्रेक्स)

प्लीहा रोग से ग्रसित पशु

परिचय

- प्लीहा रोग एक घातक संसर्गीय एवं जीवाणुजन्य रोग है जो मनुष्य को भी प्रभावित करता है।
- भारत में इसे सूचनीय वर्ग सूची में सम्मिलित किया गया है।
- यह रोग पशुओं में बैसिलस ऐन्थ्रेसिस नामक जीवाणु के कारण होता है।
- गाय, भैंस, भेड़ एवं बकरी इस रोग से अति सुग्राही हैं।
- इस जीवाणु के बीजाणु मिट्टी में वर्षों तक सुसुप्त अवस्था में पड़े रहते हैं और जब मिट्टी द्वारा दूषित आहार, जल या श्वास के माध्यम से किसी पशु के शरीर में पहुँचते है तो बहुत तेजी से विभाजित होकर बीमारी पैदा करतें है।
- उष्णकटिबंधीय एवं उपोष्णकटिबंधीय देशों में जहां अत्यधिक वर्षा होती है, इस बीमारी के जीवाणु मिट्टी में संरक्षित रहकर गंभीर महामारी फैलाते है। अतः गर्म एवं आर्द्र जलवायु इस बीमारी को महामारी का रूप लेने में सहायक हैं। इसके विपरीत, शीतोष्ण जलवायु वाले देशों में जहां मौसम ठंडा होता है इस बीमारी की आवृत्ति काफी कम होती है।
- इस बीमारी के प्रसारण के मार्ग हैं– दूषित भोजन एवं जल, श्वास द्वारा या कटी त्वचा एवं मुख में घाव के माध्यम से। दूषित भोजन एवं जल इसके प्रसारण का प्रमुख मार्ग है।
- पशु आवास में पशुओं की अधिक संख्या,मृदा का क्षारीय होना, अत्यधिक वर्षा के बाद सूखा पड़ना इस रोग को व्यापकता प्रदान करने में सहायक है। सूखे के कारण शुष्क चारा ही उपलब्ध हो पाता है जिसके खाने से मुख में घाव बन जातें हैं जो इस बीमारी के बीजाणु को मिट्टी द्वारा पशु के शरीर में प्रवेश का मार्ग देते हैं।

प्लीहा रोग से ग्रसित बछड़ा

- मनुष्य में पशु के ऊन या बाल पर मौजूद बीमारी के बीजाणु श्वांस द्वारा प्रवेश करतें हैं इसी कारण इसे "वूलसोर्टर" बीमारी भी कहा जाता है
- मृदा जनित महामारी एक विशेष मौसम में कुछ चुनिन्दा स्थानों पर ही होती है जिसे एन्थ्रेक्स वर्ष कहा जाता है।
- पशुओं में रोग काल 1–2 सप्ताह का होता है और यह बीमारी अति तीव्र एवं तीव्र रूप में पायी जाती है।
- मनुष्य में त्वचीय रूप सबसे ज्यादा पाया जाता है जबकि फेफड़े का रोग भी होता है।
- पशु कत्लखानों, चमड़ा उद्योग में कार्य करने वाले और पशु चिकित्सक इस बीमारी से ज्यादातर प्रभावित होतें हैं।

लक्षण

- गाय, भैंस एवं भेड़ में प्लीहा रोग की घातकता अत्यधिक होती है।
- अति प्रभावित पशु 2 घंटे के भीतर ही मौत का शिकार हो सकता है ।
- मृत्यु के पूर्व रोगी पशु में मांस पेशियों की अकड़न, श्वाँस की कठिनाई और क्रमिक दौरे के लक्षण देखे जा सकते हैं।
- मृत पशु के सभी प्राकृतिक छिद्रों जैसे मुँह, नाक, कान, गुदा, मूत्र मार्ग से गहरे लाल रंग के रक्त का रिसाव रोग का प्रमुख लक्षण है ।
- बीमारी के प्रभावन रूप में प्रभावित पशु में ज्वर (104–108°), अवसाद, जीभ, गले एवं कोख की सूजन पाई जा सकती है। रोगी पशु की चाल असन्तुलित हो जाती है। श्लेष्मिक झिल्लियाँ लालिमा युक्त हो सकती हैं।
- श्वसन दर एवं हृदय गति बढ़ जाती है, जबकि रूमेन की गति लगभग बन्द हो जाती है और पेट फूल जाता है। पशु मुँह से साँस लेने लगता है। गर्भित पशु में गर्भपात हो जाता है।
- जीभ, गले, वक्ष और शरीर के पिछले भाग में सूजन पायी जाती है।

उपचार

- यह सूचनीय वर्ग सूची में सम्मिलित है इसलिए तत्काल इसकी सूचना नजदीकी पशु चिकित्सक को अवश्य दें।
- रोग की स्थिति में तत्काल पशु चिकित्सक को बुलाकर निदान सुनिश्चित करायें।
- यदि उपचार शीघ्र शुरू किया जाये तो पशु को बचाया जा सकता है।
- बहुप्रभावी ऐन्टिबायोटिक जैसे पेनीसिलिन (20000 यूनिट/किलोग्राम की दर से) स्ट्रेप्टोमाइसिन (8–10 ग्राम/प्रतिदिन 2 बार), या आक्सीटेट्रासाइक्लीन (5 मिलीग्राम/किलोग्राम) उपयोगी हैं।
- पशु को बाड़े के अन्य पशुओं से तत्काल अलग करें।
- पशु बाड़े के संक्रमित भोजन एवं अन्य सामग्री को अलग कर जला दें ।
- बाड़े के आस–पास मानवीय गतिविधियों को प्रतिबन्धित करें।
- पशु बाड़े की भूमि को 5–10% कास्टिक सोडा घोल या 5 प्रतिशत फिनाईल या 5–10% फोर्मलिन घोल से विसंक्रमित करें। 3% परएसीटिक एसिड प्रभावशाली बीजाणु नाशक है।
- एन्थ्रेक्स रोधी सीरम (100–250 मि.ली.) उत्तम औषधि है।
- सहायक चिकित्सा के रूप में यकृत रक्षक, विटामिन एवं मांसपेशियों को राहत देने वाली औषधियों का प्रयोग किया जा सकता है।

रोकथाम

- 4–6 माह की आयु में प्रथम टीका लगायें तथा हर साल अप्रैल से जून की अवधि में ऐन्थ्रेक्स के टीके लगवायें।
- 72 घंटे तक टीका दिये गए पशु के दूध का सेवन न करें।
- प्रभावित क्षेत्र से पशुओं का आना–जाना वं खरीद फरोख्त प्रतिबन्धित करें।
- उत्तम प्रबन्ध की व्यवस्था करें।
- संगरोध (क्वारेनटाइन) का आवश्यक रूप से पालन करें।
- मृत पशु के शरीर को परीक्षण के लिए न खोलें और न ही खाल उतारने दें ।
- मृत पशु के शरीर को जला कर नष्ट करें या नदी नाले से दूर पर्याप्त मात्रा में चूने /नमक के साथ गहरे (2 मीटर की गहराई वाले गड्ढे में) दबा दें जिससे कुत्ते या कोई और जंगली जानवर मृत शरीर को न निकाल सके।

लेखक :

डॉ0 त्रिवेणी दत्त, संयुक्त निदेशक (शैक्षणिक), समविश्वविद्यालय

डॉ0 अशोक कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं विभागाध्यक्ष, जैविक मानकीकरण विभाग

डॉ0 रूपसी तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक

डॉ0 अखिलेश कुमार, वैज्ञानिक, औषधि विभाग

भाकृअनुप
ICAR

NAHEP

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

IVRI

कास्ट– एडवान्सड सेन्टर फॉर लाइवस्टॉक हैल्थ
भाकृअनुप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, समविश्वविद्यालय, इज्जतनगर–243 122, उ.प्र.

Printed by : ADIL-E-OFFICE MOB.: +91- 8395804304